१ इतिहास के साधन

अब तक हमने प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक भारत के इतिहास का अध्ययन किया है। इस वर्ष हम स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के भारतीय इतिहास का अध्ययन करेंगे। आधुनिक कालखंड के ऐतिहासिक साधन प्राचीन और मध्ययुगीन साधनों की अपेक्षा भिन्न हैं। लिखित साधन, भौतिक साधन, मौखिक साधन, दृश्य-श्रव्य माध्यम के साधन आदि के आधार पर इतिहास का अध्ययन किया जा सकता है। आधुनिक समय में हमें प्रादेशिक, राज्य स्तर, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के साधनों का विचार करना पड़ता है। इन साधनों की सहायता से हम इतिहास लेखन कर सकते हैं।

लिखित साधन : लिखित साधनों में निम्न साधनों का समावेश होता है।

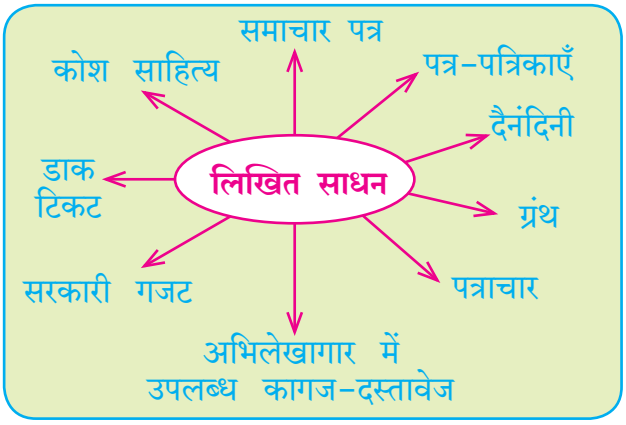

क्या आप जानते हैं?

ऐतिहासिक दस्तावेज जिस स्थान पर सुरक्षित रखे जाते हैं; उस स्थान को 'अभिलेखागार' कहते हैं। भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में है। यह अभिलेखागार एशिया महाद्वीप में सबसे बड़ा अभिलेखागार है।

आधुनिक समय में समाचारपत्र जैसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, वैसे ही वे जानकारी देने वाले प्रमुख साधन भी हैं। वर्ष १९६१ से २००० की कालावधि का विचार करें तो दिखाई देता है कि प्रारंभ में छापा माध्यमों का विशेषतः समाचारपत्रों का विकल्प नहीं था। भारत में उदारीकरण को प्रारंभ हुआ और इंटरनेट(अंतरजाल) का सब ओर प्रसार-प्रचार प्रारंभ हुआ। फलतः छापा माध्यमों का विकल्प उपलब्ध हुआ। यद्यपि ऐसा हुआ; फिर भी छापा प्रसार माध्यमों की सामर्थ्य अभी भी बनी हुई है।

समाचारपत्र : हम समाचारपत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं, राजनीति, कला, खेल-कूद, साहित्य, समाजनीति और सांस्कृतिक घटनाओं से अवगत होते हैं। मानव जीवन से जुड़ी सभी गतिविधियाँ समाचारपत्र में छपती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले समाचारपत्र समूहों ने अपने प्रादेशिक संस्करणों का प्रकाशन प्रारंभ किया है। अलग-अलग विषयों की जानकारी देने वाले उनके पूरक संस्करण होते हैं। छापा माध्यमों में आंदोलन के मुखपत्र, राजनीतिक दलों की साप्ताहिक पत्रिकाएँ अथवा दैनिक समाचारपत्र, मासिक और वार्षिक पत्रिकाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं।

कुछ समाचारपत्र वर्ष के अंत में संपूर्ण वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की समीक्षा करने वाले संस्करण प्रकाशित करते हैं। हमें उन संस्करणों द्वारा संपूर्ण वर्ष की प्रमुख घटनाओं को समझने में सहायता प्राप्त होती है।

प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (PTI) : वर्ष १९५३ के बाद भारत के बहुसंख्यक समाचारपत्रों के लिए सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं का प्राथमिक विवरण, महत्त्वपूर्ण विषयों पर आधारित लेखों का उपलब्ध स्रोत प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया था। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया ने अनगिनत समाचारपत्रों को विभिन्न समाचार, छायाचित्र, आर्थिक और वैज्ञानिक विषयों से संबंधित लेखों की आपूर्ति की है। अब पीटीआई ने अपनी ऑन लाइन सेवाएँ प्रारंभ की है। पीटीआई ने १९९० के दशक में टेलीप्रिंटर्स के स्थान पर 'उपग्रह प्रसारण' तकनीक द्वारा समाचार भेजना शुरू किया है। आधुनिक भारत के इतिहास लेखन के लिए यह सामग्री महत्त्वपूर्ण है।

क्या आप जानते हैं?

छापा (प्रिंट) माध्यम के अंतर्गत भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक ग्रंथ में समाविष्ट जानकारी विश्वसनीय होती है। जैसे : सूचना एवं प्रसारण विभाग द्वारा **'INDIA 2000'** वार्षिक संदर्भ ग्रंथ प्रकाशित किया गया है। यह ग्रंथ 'अनुसंधान संदर्भ एवं प्रशिक्षण' विभाग के अंतर्गत तैयार किया गया है।

इस ग्रंथ में देश, लोग, हमारे राष्ट्रीय प्रतीक, राजनीतिक व्यवस्था, रक्षा, शिक्षा, सांस्कृतिक घटनाएँ, विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में घटित घटनाएँ, पर्यावरण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, समाज कल्याण, दूरसंचार एवं प्रसार माध्यम, मौलिक आर्थिक जानकारी, वित्त आपूर्ति, योजना आयोग, कृषि, जल संवर्धन, ग्रामीण विकास, अनाज एवं नगरीय आपूर्ति, ऊर्जा, उद्योग, व्यापार, परिवहन, दूरसंवेदी व्यवस्था, श्रम, गृह योजनाएँ, न्याय एवं विधि, युवा और खेल कूद विभाग आदि से संबंधित घटनाओं की समीक्षा तथा सामान्य रूप से उपयुक्त जानकारी का समावेश है। ऐसी जानकारी के आधार पर हमारे लिए इतिहास का लेखन करना संभव हो जाता है।

वेबसाइट:www.publicationsdivision.nic.in

डाक टिकट : डाक टिकट स्वयं कुछ नहीं कहते परंतु इतिहासकार उनसे बुलवाता है। भारत के स्वतंत्र होने के बाद से लेकर अब तक डाक टिकटों में अलग-अलग रूपों में परिवर्तन हुए हैं। टिकटों के आकारों में आई हुई विविधता, विषयों की नवनवीनता, विभिन्न रंगसंगति के कारण डाक टिकट हमें बदलते समय के बारे में बहुत कुछ कहते रहते हैं।

डाक विभाग राजनीतिक नेताओं, पुष्पों, पशु-पक्षियों, किसी अवसर, किसी प्रसंग की रजत, स्वर्ण जयंती, अमृत महोत्सव, शताब्दी, द्विशताब्दी, त्रिशताब्दी पूर्ति के उपलक्ष्य में टिकट का प्रकाशन करता है। यह टिकट इतिहास की अनमोल थाती होता है।

क्या आप जानते हैं?

भारत सरकार ने वर्ष १९७७ में जाल कूपर टिकट का प्रकाशन करवाया। जाल कूपर 'डाक टिकट' के विषय में अंतरराष्ट्रीय स्तर के अध्ययनकर्ता थे। कूपर का जन्म मुंबई में पारसी परिवार में हुआ था। उन्होंने 'इंडियाज स्टैंप जर्नल' का संपादन कार्य किया था। वे भारत के सर्वप्रथम टिकट संग्राहक ब्यूरो के संस्थापक (First Philatelic Bureau) थे। उन्होंने 'इम्पायर ऑफ इंडिया फिलाटेलीक सोसाइटी' की स्थापना की। आगे चलकर इस विषय पर उन्होंने पुस्तकें लिखीं। अपनी इस रुचि को उन्होंने वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। भारतीय डाक टिकटों के अध्ययन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। डाक टिकट संग्राहक के कार्य को प्रारंभ कर विश्व स्तर तक पहुँचने वाले कूपर के योगदान को समझने के लिए उनपर प्रकाशित किया गया यह डाक टिकट महत्त्वपूर्ण साधन है।

जाल कूपर – डाक टिकट

भौतिक साधन: भौतिक साधनों में निम्न साधनों का समावेश होता है।

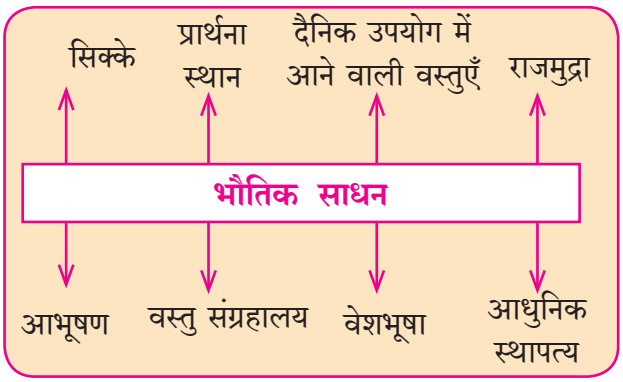

सिक्के : सिक्कों तथा बदलते गए नोटों की छपाई के माध्यम से हम इतिहास को समझ सकते हैं। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया नोटों को छापने का कार्य करता है। उसका मुख्यालय मुंबई में है।

सिक्के

वर्ष १९५० से लेकर वर्तमान समय तक के सिक्कों, उनको बनाने के लिए उपयोग में लाई गई धातु, उनके आकार, उनपर अंकित विषयों की विभिन्नता के आधार पर हमें भारत की समसामयिक और महत्त्वपूर्ण समस्याओं का बोध होता है। जैसे-जनसंख्या को सीमित रखने का संदेश देने वाले सिक्के, कृषि और किसानों का महत्त्व बताने वाले सिक्के।

संग्रहालय : भारत के सभी राज्यों में उनकी अपनी प्रादेशिक विशेषताएँ बताने वाले वस्तु संग्रहालय हैं। उनके आधार पर हमें इतिहास को समझने में सहायता प्राप्त होती है। (जैसे- मुंबई में छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय) सरकारी संग्रहालयों के अतिरिक्त कुछ संग्राहक स्वयं के संग्रहालय स्थापित करते हैं। ये संग्रहालय भी अनूठे और वैशिष्ट्यपूर्ण होते हैं। जैसे- सिक्के, नोट, विभिन्न आकारोंवाले दीये, सरौते, क्रिकेट की सामग्री।

मौखिक साधन : इन साधनों में लोककथाएँ, लोकगीत, लोकोक्तियाँ, ओवियाँ (चक्की के गीत) आदि का समावेश होता है। जैसे- संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन के समय लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे, शाहीर अमर शेख के लोकगीतों द्वारा कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्राप्त होती थी।

दृश्य और श्रव्य माध्यम: दूरदर्शन, फिल्म, इंटरनेट, (अंतरजाल) आदि साधनों को दृश्य-श्रव्य साधन कहते हैं। इनमें देशीय तथा विदेशी चैनलों का समावेश होता है। जैसे- हिस्ट्री चैनल, डिस्कवरी चैनल।

करके देखें ।

साहित्य में कोई घटना किस प्रकार प्रतिबिंबित होती है और कवि किसी घटना की ओर किस प्रकार देखता है, इसका एक उदाहरण मराठी कविवर्य कुसुमाग्रज की कविता 'आवाहन' है। यह कविता भारत और चीन के बीच हुए युद्ध की पृष्ठभूमि पर रची गई है।

बर्फाचे तट पेटुनि उठले सदन शिवाचे कोसळते
रक्त आपुल्या प्रिय आईचे शुभ्र हिमावर ओघळते !

असुरांचे पद भ्रष्ट लागुनी आज सतीचे पुण्य मळे
अशा घडीला कोण करंटा तटस्थेने दूर खळे
कृतांत ज्वाला त्वेषाची ना कोणाच्या हृदयात जळे

साममंत्र तो सरे, रणाची नौबत आता धडधडते
रक्त आपुल्या प्रिय आईचे शुभ्र हिमावर ओघळते !

ऐसी ही अनगिनत घटनाओं पर लिखे गए साहित्य की खोज कीजिए।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (FTII) : भारत सरकार ने पुणे में वर्ष १९६० में लोकशिक्षा देने के उद्देश्य से फिल्म एंड टेलीविजन इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडिया नामक संस्थान की स्थापना की। इंडियन न्यूज रिव्यू नामक संस्थान ने राजनीति, समाजनीति, कला, खेल-कूद और संस्कृति जैसे विभिन्न क्षेत्रों में घटित महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित समाचार फिल्में (डॉक्यूमेंटरी फिल्में) बनाई हैं। इस विभाग ने समाज का नेतृत्व करने वाले और देश के लिए अपना योगदान देने वाले व्यक्तियों और महत्त्वपूर्ण स्थानों की जानकारीप्रद अनुबोध फिल्में(डॉक्यूमेंटरी)

एफटीआईआई का बोध चिह्न

करके देखें

तुम्हें देशभक्ति के विषय पर बनी कौन-कौन-सी फिल्में मालूम हैं?

तुम्हें जो फिल्म अच्छी लगी है, उसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

बनाई हैं। आधुनिक भारत के इतिहास का अध्ययन करने के लिए ये समाचार फिल्में और अनुबोध फिल्में उपयोगी हैं।

अब तक हमने इतिहास लेखन के लिए उपयोगी कुछ साधन देखे हैं। इक्कीसवीं शताब्दी में समय इतनी तीव्र गति से बदल रहा है कि ये साधन भी अपर्याप्त सिद्ध होंगे। परिणामस्वरूप अब स्वाभाविक रूप से नए साधन आगे आ रहे हैं। जैसे-घरेलू टेलीफोन से लेकर मोबाइल तक। इस यात्रा में 'पेजर' नामक साधन संपर्क करने हेतु अस्तित्व में आया था। यह जिस तेज गति से आया था, उसी तेज गति से समाप्त भी हो गया। अंतरजाल (इंटरनेट) पर उपलब्ध विपुल और प्रचंड जानकारी का भी उपयोग इतिहास के लेखन में किया जाता है, परंतु इस जानकारी की सत्यता और यथार्थता की जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है।

इन सभी साधनों के आधार पर इतिहास का अध्ययन करना सहज और सरल हो गया है। साथ ही, ये सभी साधन आधुनिक समय के हैं। अतः उनका उपलब्ध होना संभव होता है। इतिहास मानव जीवन के सभी अंगों को स्पर्श करता है। अतः उसके साधनों के संरक्षण के प्रयास सभी स्तरों पर किए जा रहे हैं। ऐसे प्रयास हम भी करेंगे।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार ..... में है।

(अ) पुणे (ब) नई दिल्ली

(क) कोलकाता (ड) हैदराबाद

(२) दृश्य-श्रव्य साधनों में ..... साधन का समावेश होता है।

(अ) समाचारपत्र (ब) दूरदर्शन

(क) आकाशवाणी (ड) पत्र-पत्रिकाएँ

(३) भौतिक साधनों में ..... का समावेश नहीं होता है।

(अ) सिक्के (ब) आभूषण

(क) इमारतें (ड) लोकोक्तियाँ

(ब) निम्न में से विसंगत जोड़ी पहचानिए और लिखिए।

व्यक्ति	विशेष
जाल कूपर	- डाक टिकट के अध्ययनकर्ता
कुसुमाग्रज	- कवि
अण्णाभाऊ साठे	- लोकशाहीर
अमर साबले	- चित्र संग्राहक

२. टिप्पणी लिखिए।

(१) लिखित साधन (२) प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया

३. निम्नलिखित विधान कारणसह स्पष्ट कीजिए।

(१) डाक विभाग डाक टिकटों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विरासत एवं समरसता के संवर्धन तथा संरक्षण हेतु प्रयास करता है।

(२) आधुनिक भारत का इतिहास लिखने के लिए दृश्य-श्रव्य माध्यम महत्त्वपूर्ण होते हैं।

उपक्रम

(१) विद्यालय का हस्तलिखित समाचारपत्र (डाक्यूमेंटरी) तैयार कीजिए।

(२) Archaeological Survey of India के अधिकृत संकेत स्थल पर उपलब्ध अलग-अलग जानकारीप्रद डॉक्यूमेंटरीज देखिए।

(३) आप अपने गाँव का इतिहास लिखने के लिए किन साधनों का उपयोग करेंगे? उन साधनों की सहायता से अपने गाँव का इतिहास लिखिए।

7F9CBF